नगरीय मध्यमवर्गीय बच्चों की विद्यालयेतर अधिगम पारिस्थितिकी

रवनीत कौर*

वर्तमान में भारत का नगरीय मध्यम वर्ग एक ऐसे समूह के रूप में उभरा है, जो अच्छी शिक्षा के माध्यम से ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था का लाभ उठा रहा है। यह वर्ग सामान्यत: उच्च शिक्षित, उच्च आयवर्गीय तथा पक्की इमारतों में रहने वाले एकल परिवार हैं, जहाँ अधिकांशतः पति-पत्नी दोनों अपनी-अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार रोज़गार कर रहे हैं। इस वर्ग से आने वाले बच्चे परिवार की सामाजिक पृष्ठभूमि एवं पहचान, शैक्षिक संलग्नताओं और संसाधनों तक सुगम्य पहुँच के कारण विशिष्ट अधिगम पारिस्थितिकी के भागीदार होते हैं। यह शोध पत्र इसी वर्ग पर किए गए शोध पर आधारित है। जिसमें नगरीय मध्यमवर्गीय परिवारों के घरेलू अधिगम परिवेश, बच्चों की अधिगम पारिस्थितिकी में अभिभावकों का जुड़ाव, विद्यालयेतर परिवेश और विद्यालयी कार्यों की पारस्परिकता तथा जनसंचार एवं डिजिटल माध्यमों के साथ बच्चों के जुड़ाव की व्याख्या की गई है।

भारत की अर्थव्यवस्था में उदारवादी सुधारों के उपरांत नगरीय मध्यम वर्ग के स्वरूप और विस्तार में बदलाव हुआ है तथा इस विस्तार और बदलाव से संयुक्त परिवार व्यवस्था एकल परिवार में बदल गई। इसीलिए एकल परिवारों की अधिकतर संलग्नता सेवा क्षेत्र, सूचना प्रौद्योगिकी, प्रबंधन, प्रशासन, व्यवसाय, स्वरोज़गार आदि में होने लगी है। वर्तमान में बाज़ार का सबसे बड़ा उपभोक्ता यही वर्ग है। गाँव के संपन्न किसानों के बच्चे, जो तकनीकी और प्रबंधन जैसी पेशेवर शिक्षा के बाद महानगरों में प्रवास कर रहे हैं, वे इस जनसंख्या का एक बहुत बड़ा हिस्सा हैं (देशपांडे, 2003)। यह वर्ग ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था के लिए खुद को तैयार करता है और इसके लिए शिक्षा ही सबसे बड़ी पूँजी और निवेश का क्षेत्र है (भाविस्कर और रे, 2011)। अपने पाल्यों को अच्छे विद्यालय और उच्च शिक्षा संस्थानों में पढ़ाने का मोह एवं विदेशों में बच्चों को भेजने की उत्सुकता इस वर्ग में सर्वाधिक है। यह वर्ग नए तरह के नौकरी एवं स्टार्टअप के अवसरों का लाभ उठाने में सबसे आगे और अपने बच्चों के 'वैज्ञानिक' लालन-पालन के लिए तत्पर रहता है।

संसाधनों पर अधिकार और बदलती सामाजिक गति की विशेष रूप से नगरीकरण, प्रवसन और रोज़गार में भागीदारी के बदलाव के कारण उभरे

**असिस्टेंट प्रोफेसर,* माता सुंदरी महिला कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 110002

'नए मध्यम वर्ग' पर शोध अध्ययन आवश्यक है। यह वर्ग अपनी सामाजिक एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि तथा संसाधनों तक सुगम्य पहुँच के कारण किस तरह से अपने बच्चों की अधिगम पारिस्थितिकी को संरचित कर रहा है और इसके कारण बच्चों को शैक्षिक अवसरों में किस तरह का 'लाभ' मिल रहा है? इस पर पड़ताल करने की आवश्यकता है। शोध अध्ययन हमें मध्यम वर्ग केंद्रित सामाजिक पुनरुत्पादन की प्रक्रिया को समझने में सहयोग करेगा।

इसी संदर्भ में फेडरिक (2011) कहते हैं कि इन मध्यमवर्गीय परिवारों के बच्चों की विद्यालयेतर अधिगम पारिस्थितिकी अद्वितीय होती है। ये बच्चे अपनी दैनिक सक्रियता के दौरान विद्यालय की गतिविधियों की तुलना में विद्यालयेतर गतिविधियों में अधिक संलग्न रहते हैं (लार्सन और वर्मा, 1999)। उनकी इस प्रकार की संलग्नता को समझे बिना उनके विकासात्मक संदर्भ की सम्यक व्याख्या नहीं की जा सकती है। इसे ही ध्यान में रखते हुए यह शोध अध्ययन नगरीय मध्यमवर्गीय बच्चों की विद्यालयेतर अधिगम पारिस्थितिकी पर किया गया था।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के उद्देश्य थे—

- घरेलू अधिगम परिवेश के कर्ता की भूमिका के रूप में विद्यार्थियों की संलग्नता का अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों की अधिगम पारिस्थितिकी में अभिभावकों की संलग्नता का अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों के विद्यालयेतर परिवेश में विद्यालयी कार्यों की उपस्थिति का अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों की जनसंचार और डिजिटल माध्यमों के साथ संलग्नता की व्याख्या करना।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

परिवार विद्यालयेतर अधिगम पारिस्थितिकी का एक महत्वपूर्ण घटक होता है। यह सामाजिक पुनरुत्पादन का केंद्र होता है जहाँ केवल अभिभावकों की व्यावसायिक या पेशेवर स्थिति ही महत्वपूर्ण नहीं होती है, बल्कि उनके सामाजिक संबंधों का जाल, सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि जन्य 'सांस्कृतिक पूँजी' जिसमें भाषा, व्यवहार के तौर-तरीके, संप्रेषण की कुशलता आदि भी बच्चों के विकास को प्रभावित करती है। नांबिसान (2009) मध्यमवर्गीय परिवारों की सामाजिक गतिशीलता के लिए प्रयत्न करने के साथ-साथ अर्जित सामाजिक-आर्थिक हैसियत को सुरक्षित रखने का भी उपाय सोचते हैं। इसके लिए वे केवल शिक्षा ही पर्याप्त नहीं समझते बल्कि मध्यमवर्गीय अस्मिता के व्यवहारों और प्रतीकों को परिवार एवं समुदाय के माध्यम से संपोषित करते हैं। परिवार के द्वारा सोद्देश्य संपोषण की इस प्रवृत्ति को लारयू (2011) ने केंद्रित संपोषण कहा है जिसका लक्ष्य बच्चों के भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए उन्हें मध्यमवर्गीय अधिगम पारिस्थितिकी में प्रशिक्षित करना होता है। इसके लिए अभिभावक सक्रिय भूमिका अपनाते हैं। वे विद्यालय के साथ घनिष्ठता से कार्य करते हैं। घर पर विद्यालय सदृश्य परिस्थितियों में बच्चों के साथ कार्य करते हैं। वे बच्चों की 'प्रतिभाओं' को विद्यालय जैसी संस्थाओं के माध्यम से यथाशीघ्र विकसित करने के लिए तत्पर रहते हैं। वे खेल, कला और शिल्प की कौशल एवं दक्षता आधारित संरचित गतिविधियों के माध्यम से अपने पाल्यों का समग्र विकास करना चाहते हैं।

कुमार (2011) अपने शोध अध्ययन के माध्यम से भारत के मध्यमवर्गीय परिवारों के

बच्चों की बाल्यावस्था की विशेषताओं पर प्रकाश डालती हैं। इन्होंने अपने शोध अध्ययन में पाया कि अभिभावकों की आकांक्षाओं का बच्चों में आरोपण भारतीय मध्यम वर्ग की एक प्रमुख विशेषता है। वे अपने बच्चों की अकादमिक उपलब्धि की प्रस्तुति और उसे बढ़ा-चढ़ा कर बताने में कोई शर्म नहीं करते हैं। मध्यमवर्गीय अभिभावक अपने बच्चों की अकादमिक सफलता को एक मिशन मानते हैं और वे इसे पूर्ण करने के लिए हर तरह के त्याग के लिए तैयार रहते हैं। बच्चे भी अभिभावकों की आकांक्षाओं के साथ अनुबंधित हो जाते हैं और वे सफल होने के अभियान की प्रतियोगिता का हिस्सा बन जाते हैं।

नगरीय मध्यमवर्ग के बच्चों की अधिगम पारिस्थितिकी को नगरीय आवास व्यवस्था भी प्रभावित करती है। वैलेंटाइन (2004) ने अपने शोध कार्य में बताया है कि जैसे-जैसे बहुमंजिला इमारतों वाली आवासीय व्यवस्था का विकास होता गया वैसे-वैसे बच्चों की गतिविधियों की प्रकृति और स्थान के साथ उनकी संलग्नता बदली है और इससे बच्चों के लिए तय स्थान कम होते गए हैं। अभिभावक बच्चों की सुरक्षा संबंधित समस्याओं के कारण उन्हें बिना निगरानी के बाहर नहीं आने-जाने देते हैं। घर के भीतर खेल, आपसी अंतःक्रिया और घरेलू कार्यों में संलग्न रखते हैं। घर की संरचना पूरे परिवार की दिनचर्या को नियंत्रित करने का कार्य करती है। यह बच्चों के मुक्त विचरण पर एक तरह की पाबंदी है।

मध्यमवर्गीय अधिगम पारिस्थितिकी में मीडिया की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके द्वारा बच्चों को नए-नए रोल मॉडल उपलब्ध कराए जा रहे हैं। वे सूचना के वैश्विक संसार से परिचित हो रहे हैं। मीडिया की मध्यस्थता से बच्चों के 'आत्म' का विकास प्रभावित हो रहा है। उनमें भारतीयता के साथ-साथ 'वैश्विक' होने की आकांक्षा भी विकसित होने लगी है। मध्यमवर्गीय परिवार जहाँ अपनी धार्मिक, जातीय और क्षेत्रीय अस्मिता को नहीं छोड़ना चाहते हैं, वहीं वे 'कॉस्मोपॉलिटन' संस्कृति को भी अपनाने के लिए सजग हैं। यह वर्ग किताबी ज्ञान के बदले व्यवहार और हाव-भाव (मैनेरिज्म) को अपनाने में सबसे आगे हैं। मध्यमवर्गीय अभिभावक अपने पाल्यों को उन चुनौतियों से मुक्त रखना चाहते हैं जो उन्हें उनके 'गाँव' और 'कस्बों' में झेलनी पड़ी थी (कपूर 1998)। गुप्ता (2019) ने अपने शोध कार्य के आधार पर बताया है कि मध्यमवर्गीय परिवारों में बच्चों की शिक्षा के लिए माताओं की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। वे घर में सीखने का अनुकूल माहौल बनाती हैं। वे अध्यापकों और विद्यार्थियों द्वारा सीखने के लिए संसाधनों की माँग की पूर्ति करती हैं। वह बच्चों की दिनचर्या को संरचित रखते हुए गृहकार्य पूर्ण कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

शोध विधि

इस शोध अध्ययन हेतु प्रतिदर्श के रूप में सोद्देश्य न्यादर्श विधि द्वारा पूर्वी दिल्ली के एक निजी विद्यालय के 11 विद्यार्थियों और उनके परिवार के सदस्यों का चयन किया गया। इन चयनित विद्यार्थियों के परिवार की आय का प्रमुख स्रोत वेतन (सूचना प्रौद्योगिकी, प्रबंधक, चिकित्सक आदि क्षेत्रों में नौकरी) और व्यवसाय था। जिसका विवरण तालिका 1 में दिया गया है।

तालिका 1— विद्यार्थियों के नाम व कक्षा तथा उनके माता-पिता की व्यावसायिक स्थिति

नाम	कक्षा	परिवार के सदस्य	पिता की व्यावसायिक स्थिति	माता की व्यावसायिक स्थिति
शौर्य	6	माता-पिता, भाई और बहन	स्वयं का व्यवसाय	गृहिणी
योग्या	6	माता-पिता, भाई और बहन	केंद्र सरकार की सेवा में	अध्यापिका
निशीथ	7	माता-पिता और पुत्र	चिकित्सक	चिकित्सक
अर्नव	7	माता-पिता और दो भाई	अभियंता	अभियंता
माहिर	6	माता-पिता और दो भाई	निजी क्षेत्र में प्रबंधन कार्य	गृहिणी
कनिष्क	7	माता-पिता और पुत्र	विश्वविद्यालय में अध्यापक	अध्यापिका
अथर्व	8	माता-पिता, भाई और बहन	स्वयं का व्यवसाय	गृहिणी
प्रिशा	8	माता-पिता, भाई और बहन	केंद्र सरकार की सेवा में	केंद्र सरकार की सेवा में
ईशानी	6	माता-पिता और दो बहन	निजी क्षेत्र में प्रबंधन कार्य	निजी क्षेत्र में कार्य
दिव्यान्शी	7	माता-पिता और दो बहन	अभियंता	निजी क्षेत्र में प्रबंधन कार्य
सार्थक	8	माता-पिता, दो भाई और एक बहन	स्वयं का व्यवसाय	गृहिणी

शोध उपकरण

इस शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा आँकड़ों के एकत्रीकारण के लिए अर्ध संचरित साक्षात्कार का प्रयोग किया गया। अभिभावक और विद्यार्थियों दोनों का साक्षात्कार 40 से 60 मिनट तक लिया गया। इन चयनित आँकड़ों का एकत्रीकारण दिसंबर 2020 से अप्रैल 2021 के बीच किया गया था।

प्रदत्तों का विश्लेषण

तालिका 1 में चयनित न्यादर्श से साक्षात्कारों से प्राप्त जानकारी के संकलन से ज्ञात होता है कि—

- घर में बच्चों की घरेलू कार्यों में पर्याप्त अनौपचारिक और असंरचित संलग्नताएँ होती हैं। न्यादर्श में सभी चयनित विद्यार्थियों ने बताया कि वे अभिभावकों की घरेलू कार्यों में मदद करते हैं। इसमें सर्वाधिक आवृत्ति माता के साथ घरेलू कार्यों में सहयोग करने की थी। भागीदार बच्चों ने रात का भोजन परोसना, बड़ों को पानी और चाय देना, स्थानीय बाज़ार से सामान लाने, कमरों को साफ़ करने जैसे कार्यों में अपने सहयोग का उल्लेख किया। भागीदार माताओं ने भी सहमति दी कि उन्होंने अपने परिवारों में सोद्देश्य सहयोग की संस्कृति विकसित की है। लेकिन वे इस बात का भी ध्यान रखती हैं कि इससे पाल्यों की पढ़ाई बाधित न हो। इस तरह की गतिविधियों का लाभ बताते हुए अभिभावक मानते हैं कि इससे पाल्यों को आत्मनिर्भर बनने में मदद मिलती है। यह भी उल्लेखनीय है कि बच्चे घर में किसी संरचित और लंबी अवधि की गतिविधि में सहभागिता नहीं करते बल्कि सब्ज़ी छीलने, बर्तनों को व्यवस्थित रखने, पानी की बोतल भरकर फ्रिज में रखने जैसे कार्य ही करते हैं। वे नींबू पानी बनाना, शरबत और शेक बनाने में मदद करते हैं। शौर्य ने साझा किया कि वह अपनी मम्मी की सहायता से कोल्ड कॉफी बना सकता है। योग्या ने बताया

कि वह चाय और मैगी दोनों बना सकती है। निशीथ ने बताया कि वह घर के सभी सदस्यों के लिए शरबत बना सकता है। बच्चे अवकाश के दिनों में अभिभावकों के साथ मिलकर घर की सफ़ाई भी करते हैं। वे अपने बिस्तर, मेज़ और कॉपी-किताब को व्यवस्थित करते हैं। घर में रखे गमलों एवं पौधों की देखरेख भी करते हैं।

- जब माता खाना बनाती हैं या कोई अन्य काम करती हैं, तब संभवत: पाल्य उनके आसपास उपस्थित रहते हैं। इस दौरान आवश्यक नहीं है कि हर बार वे मदद ही करें। वे उनसे अनौपचारिक बातचीत भी करते रहते हैं। इस तरह की अनौपचारिक चर्चाएँ दैनंदिन ज्ञान से पूर्ण होती हैं। उदाहरण के लिए, वॉशिंग मशीन में अलग डिटर्जेंट क्यों प्रयोग करते हैं? गैस का बिल कैसे जमा किया जाता है? टाइल्स के डिजाइन में कौन-से पैटर्न हैं? आदि। इस तरह की चर्चाएँ विद्यालयी ज्ञान और दैनंदिन ज्ञान के बीच संबंध को मज़बूत करने का कार्य करती हैं। इसी तरह बागवानी और घर के छोटे-मोटे उपकरणों को ठीक करने जैसे कार्य भी कुशलताओं के विकास में योगदान देते हैं। इस प्रकार की घरेलू संलग्नताओं के माध्यम से मध्यमवर्गीय अभिभावक अपने बच्चों को महत्वपूर्ण होने का बोध कराते हैं। पाल्यों की घरेलू कार्यों में भागीदारी श्रम आधारित अभ्यास है जिससे वे कार्यों की ज़िम्मेदारी एवं श्रम का महत्व सीखते हैं तथा जिससे पाल्यों में एक सकारात्मक आत्मबोध विकसित होता है।
- घर में छोटे भाई-बहनों के साथ समय बिताना भी एक महत्वपूर्ण संलग्नता है। इस दौरान भाई-बहन एक साथ खेलते हैं, टीवी देखते हैं और एक-दूसरे की गृहकार्य को पूरा करने में मदद करते हैं। इस शोध अध्ययन के भागीदार विद्यार्थी भी अपने भाई-बहनों के साथ लूडो, शतरंज, वीडियो गेम, कैरम जैसे इंडोर गेम सर्वाधिक खेलते हैं। कई बार वे मिलकर अपने अभिभावकों के लिए 'नाश्ता' भी तैयार करते हैं। भागीदार अपने भाई-बहनों के साथ पार्क, बाज़ार और दोस्तों के घर जाते हैं। वे आपस में पढ़ाई, खेल और टेलीविजन से जुड़े कार्यक्रमों पर चर्चा करते हैं। विज्ञान और सामाजिक विज्ञान की परियोजनाएँ पूर्ण करने में एक-दूसरे की मदद करते हैं। जैसे कि अर्नव बताता है कि पहले वह और उसका भाई एक साथ मिलकर पढ़ाई किया करते थे। बाद में समझ में आया कि दोनों का पढ़ने का तरीका अलग-अलग है, इसीलिए अब वे अलग-अलग स्थानों पर पढ़ते हैं। वे दोनों प्रयास करते हैं कि वे एक-दूसरे को परेशान (डिस्टर्ब) ना करें।
- इस शोध अध्ययन में पाया गया कि पाल्यों और अभिभावकों में अनौपचारिक चर्चा भी होती है। इस बातचीत का विषय अधिकांशतः विद्यालय और भविष्य की सफलता से जुड़ा होता है। वे समसामयिक घटनाओं पर भी बातचीत करते हैं। माता-पिता बच्चों की इच्छाओं को सुनते हैं और उनका सम्मान करते हैं। वे बच्चों के साथ यह भी चर्चा करते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। बच्चों की अभिभावकों के साथ एवं हमउम्र साथियों के साथ संबंधों पर भी चर्चा होती है। उदाहरण के लिए, माहिर ने बताया कि बैडमिंटन के खेल के दौरान उसकी पड़ोस के दोस्त के साथ लड़ाई हो गई थी। उसने इसके बारे में मम्मी से बात

की तो उन्होंने समझाया कि हमें दोस्तों के साथ अपनी वस्तुओं को साझा करना चाहिए और उनसे होने वाली लड़ाई को टालना चाहिए। एक-दूसरे की छोटी-छोटी बातों का बुरा नहीं मानना चाहिए। अभिभावक पाल्यों की उपलब्धियों की सराहना करते हैं। उदाहरण के लिए, अर्नव ने बताया कि उसने इंडियन कोडिंग प्रतियोगिता के अंतर्गत विद्यालय में द्वितीय स्थान प्राप्त किया था। इस सूचना को उसके पिता ने अपने फेसबुक अकाउंट पर शेयर किया था। ऐसे ही योग्या ने बताया कि उसकी माँ ने अपनी सहेलियों के साथ इस तथ्य को साझा किया कि योग्या ने विज्ञान की परियोजना में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

अभिभावकों द्वारा धार्मिक रीति-रिवाज और नैतिक शिक्षा पर भी बल दिया जाता है। जैसा कि अर्नव की माता ने बताया कि उनके घर में ऐसा नियम है कि सुबह उठकर सभी बड़ों को प्रणाम करते हैं। सुबह की पूजा में घर के सभी सदस्य भाग लेते हैं। यदि कोई रिश्तेदार आता है तो उन्होंने अपने बच्चों को सिखाया है कि वे उनके पैर छुएँ। दादा-दादी उसे रामायण, महाभारत और अन्य धार्मिक कहानियाँ सुनाते हैं। महीने में विशेष अवसरों पर पंडित जी आते हैं जो उन लोगों से धार्मिक विषयों पर बात करते हैं।

मध्यमवर्गीय अभिभावक— विद्यालय और विद्यालयेतर अधिगम पारिस्थितिकी के योजक

इस शोध कार्य में भागीदार सभी मध्यमवर्गीय अभिभावकों ने अपने साक्षात्कार में साझा किया कि वे बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में मार्गदर्शन और सहयोग करते हैं। सभी अभिभावकों ने यह आकांक्षा व्यक्त की कि उनके पाल्य औपचारिक शिक्षा में बेहतर प्रदर्शन करें। इसके लिए वे प्रत्येक स्तर पर सहयोग एवं प्रयत्न करते हैं। इन प्रयत्नों की सूची को वे विद्यालय के चयन से आरंभ करते हैं। अभिभावकों के अनुसार वे प्रतिष्ठित विद्यालयों का चयन करते हैं। इसके लिए अपने सामाजिक संबंध जाल अर्थात अपने मित्रों, रिश्तेदारों और वरिष्ठ अधिकारियों आदि की सलाह लेते हैं। कनिष्क के पिता बताते हैं कि उन्होंने लगभग सौ विद्यालयों में आवेदन किया था। इसके बाद उपलब्ध विकल्पों में से सबसे बेहतर विकल्प का चयन किया। उन्होंने जिस विद्यालय का चयन किया वहाँ उनके परिसर के बच्चे भी पढ़ते थे। अभिभावक विद्यालय के चयन में शिक्षा की गुणवत्ता के साथ-साथ सुविधाओं का भी मूल्यांकन करते हैं। इसके अंतर्गत वाहन, पाठ्य सहगामी गतिविधियों और अध्यापकों के व्यवहार को वे कसौटी के रूप में प्रयुक्त करते हैं। अथर्व की माताजी ने कहा, "जिस विद्यालय में संसाधन होगा, वहीं पढ़ाई होगी। विशेषकर मैंने यह देखा कि क्या विद्यालय खेल, कला और अभिनय जैसे क्षेत्रों में सहयोग करता है?" ईशानी के पिता ने बताया कि जिस विद्यालय में उनकी बेटी पढ़ती है, वहाँ के कुछ अध्यापकों को वे व्यक्तिगत रूप से जानते हैं। इस कारण उन्हें विश्वास है कि विद्यालय में उनकी बेटी का ध्यान रखा जाएगा। अभिभावकों ने बच्चों की शिक्षा में अपनी भूमिका को रेखांकित करते हुए यह मत व्यक्त किया कि वे चाहते हैं, "विद्यालयी शिक्षा उनके बच्चों के लिए तनाव का कारण न बने।" विद्यालय उनके बच्चों के लिए आनंददायक अधिगम स्थल बने। अभिभावकों के ये विचार मध्यमवर्गीय संस्कृति को दर्शाते हैं, जहाँ

शिक्षा को आनंद के समतुल्य मानने का विश्वास व्याप्त है। इस विश्वास के निर्माण में अभिभावकों का स्वयं का विद्यालयी अनुभव भी योगदान देता है। जैसे, अर्थव के पिता ने बताया कि जब वे विद्यालय में थे तो उनके गणित के अध्यापक का रवैया उनके प्रति अच्छा नहीं था। योग्या की माता ने बताया कि जब वे विद्यालय में पढ़ती थीं तो लड़कियों को विद्यालय में खेल एवं कला से संबंधित गतिविधियों के कम अवसर उपलब्ध होते थे। उन अनुभवों के कारण, अभिभावक अपने पाल्यों को उक्त नकारात्मक परिस्थितियों से बचाना चाहते हैं। इस शोध अध्ययन के भागीदारों ने अपनी भूमिका को विद्यालय की गतिविधियों के अवलोकनकर्ता, विद्यालय के साथ घनिष्ठ संबंध निभाने वाले हितचिंतक और पाल्यों को अभिप्रेरित करने वाले कर्ता की बताई।

विद्यालय के साथ भागीदारी पर चर्चा करते हुए अभिभावकों ने साझा किया कि वे अभिभावक व अध्यापक बैठक (पी.टी.एम.) में हमेशा उपस्थित होते हैं। इस दौरान विद्यार्थियों की प्रगति के साथ-साथ विद्यालय द्वारा किए जा रहे नवाचारों के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। अभिभावकों के अनुसार 'नवाचार' ही शिक्षा को किताबी ज्ञान से अलग बनाते हैं। इस संदर्भ में प्रिशा के पिता कहते हैं, "किताब तो बच्चे घर पर भी पढ़ लेंगे, मैं चाहता हूँ कि स्कूल में वे नए प्रकार के क्रियाकलाप, जैसे— रोबोटिक्स, ओलंपियाड, पत्रिका का संपादन आदि करें।" इस तरह के विचार अन्य अभिभावकों ने भी साझा किए और कहा कि वे विद्यालय से प्राप्त इन जानकारियों पर अपने सहकर्मियों के साथ चर्चा करते हैं तथा इंटरनेट पर इनके बारे में अध्ययन करते हैं। अभिभावकों का यह प्रयास होता है कि वे विद्यालय के प्रयोगों और नवाचारों की 'भविष्य की उपादेयता' से भली-भाँति परिचित हों। इसके लिए पी.टी.एम. एक महत्वपूर्ण माध्यम होता है। इस दौरान अभिभावक विद्यार्थी की अकादमिक प्रगति के साथ-साथ सामाजिक विकास, खेल और कला आदि क्षेत्रों में विकास पर भी चर्चा करते हैं। अभिभावकों ने बताया कि यदि उन्हें लगता है कि पाल्य को विद्यालय में कोई अकादमिक समस्या है या समायोजन संबंधित समस्या है, तो वे विद्यालय प्रशासन के साथ बात करके संबंधित अध्यापक के साथ बैठक करते हैं। अभिभावकों ने अध्यापकों के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने की युक्ति को भी साझा किया। वे अध्यापकों के साथ व्हाट्सएप और सोशल मीडिया पर जुड़े हुए हैं।

अभिभावकों ने एक स्वर में स्वीकृति दी कि वे अपने पाल्यों के साथ गहरा भावनात्मक रिश्ता बनाने का प्रयत्न करते हैं। इसी भूमिका की व्याख्या करते हुए—

- सार्थक के पिता बताते हैं कि वे सार्थक के अकादमिक प्रदर्शन को लेकर चिंतित तो रहते हैं लेकिन इस चिंता को वे सार्थक पर ज़ाहिर नहीं करते हैं। वे हमेशा उसे अच्छा करने के लिए अभिप्रेरित करते हैं। बच्चे उन्हें अपना मित्र समझें, इस कारण वे स्वयं बच्चों के साथ खेलते हैं। उन्हें ऐतिहासिक स्थानों पर घूमाने ले जाते हैं। उनके साथ गणित, विज्ञान और अंग्रेजी के अध्यापकों और कक्षाओं के बारे में चर्चा करते हैं।
- योग्या की माँ बताती हैं कि उन्होंने अपने बच्चों के साथ ऐसा संबंध विकसित किया कि बच्चे

खुद ही विद्यालय से आने के बाद स्कूल की घटनाओं पर उनसे बातचीत करना पसंद करते हैं।

- कनिष्क के घर में रात्रि के भोजन के दौरान विद्यालयी अनुभवों पर बात करने का चलन है। योग्या, ईशानी और अर्नव के अभिभावकों ने ऐतिहासिक और भौगोलिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों की यात्राओं का उल्लेख किया। शौर्य के पिता कहते हैं, "मेरी खुद की दिनचर्या व्यस्तता भरी रहती है फिर भी मैं चाहता हूँ कि मैं अपने बच्चों के साथ बैठकर विद्यालयी अनुभव पर बातचीत करूँ। इसके अलावा मैं उसके साथ नई तकनीकों और विज्ञान के प्रयोगों पर बात करता हूँ। इसके लिए मैं अखबार की मदद लेता हूँ।" अन्य अभिभावकों ने भी समसामयिक घटनाओं, खेल गतिविधियों की जानकारी प्रदान करने में अपनी भूमिका की चर्चा की। अभिभावकों ने यह भी बताया कि मूल्य आधारित शिक्षा में दादा-दादी और नाना-नानी योगदान करते हैं। वे बच्चों के साथ पारंपरिक नैतिक कथाओं पर बातचीत करते हैं। उन्हें धार्मिक रीति-रिवाजों से परिचित कराते हैं। विद्यार्थियों ने भी अपने साक्षात्कार में अभिभावकों के मनोवैज्ञानिक सहयोग के प्रति सहमति दी।
- योग्या ने कहा कि उसकी माँ 'बेस्ट फ्रेंड' हैं जिससे वह किसी भी विषय पर बातचीत कर सकती है।
- निशीथ बताता है कि उसके पिता उसके 'बेस्ट बडी' हैं। वे स्वयं उसे विद्यालय तक छोड़ने जाते हैं। उससे स्कूल की गतिविधियों पर बातचीत करते हैं।
- अर्नव बताता है कि उसके अभिभावक उस पर अकादमिक उपलब्धि के लिए कोई दबाव नहीं डालते हैं। वे उसकी समस्याओं को सुनते हैं और उसकी मदद करते हैं। अभिभावकों ने स्वयं की भूमिका को शैक्षिक अनुभवों का विस्तार देने वाले की बताई।
- इसके अंतर्गत कनिष्क के पिता ने बताया कि वे अपने अपार्टमेंट के बच्चों को लेकर नेचर वॉक पर गए थे।

गृहकार्य— घर पर विद्यालय की छाया

इस शोध अध्ययन के भागीदार विद्यार्थियों ने बताया कि उन्हें विद्यालय से नियमित रूप से गृहकार्य मिलता है। इस कार्य को करने में उन्हें 2 से 3 घंटे लगते हैं। गृहकार्य की प्रकृति के बारे में विद्यार्थियों का मानना था कि उन्हें पाठ्यपुस्तक के अभ्यास कार्य, परियोजना कार्य, कलात्मक कार्य, गणित और विज्ञान की वर्कशीट मिलती हैं। शौर्य ने यह बताया कि गणित में सबसे अधिक गृहकार्य मिलता है। कई बार तो पूरा का पूरा अध्याय ही करने को मिल जाता है। दिव्यांशी और माहिर ने साझा किया कि उन्हें कई बार मौखिक परीक्षा और कक्षा परीक्षण के लिए तैयारी जैसे गृहकार्य भी मिलते हैं। इन भागीदारों ने साझा किया कि सप्ताहांत और अन्य अवकाशों के समय अधिक गृहकार्य मिलता है।

सभी विद्यार्थियों ने साझा किया कि उनके अभिभावक गृहकार्य पूर्ण करने में मदद करते हैं। इसमें माता की भूमिका को सभी ने सर्वोपरि बताया।

- अथर्व ने साझा किया कि उसकी माँ गृहकार्य करने में बहुत मदद करती हैं, जैसे— प्रश्नों

को समझाना, कला और शिल्प संबंधित परियोजनाओं को पूरा करने में मदद करना, इंटरनेट से सूचनाओं को इकट्ठा करना, प्रिंट आउट निकालना और अभ्यास कार्य समझ में ना आने पर कक्षा अध्यापिका या संबंधित अध्यापक से बात करना।

- निशीथ का कहना था कि मम्मी के साथ गृहकार्य करते समय मजा आता है, हम दोनों होमवर्क का आनंद लेते हैं।
- दिव्यांशी ने साझा किया कि सामाजिक विज्ञान का गृहकार्य केवल मम्मी की मदद से ही हो सकता है। उसमें प्रश्न-उत्तर लिखने होते हैं, मानचित्र संबंधित कार्य करने होते हैं, चित्र और मॉडल बनाने होते हैं। इन सभी कार्यों में मम्मी मदद करती हैं। विद्यार्थियों ने बताया कि अभिभावक घर पर विज्ञान के प्रयोग करने में भी उनकी मदद करते हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि गृहकार्य एक ऐसा माध्यम है जो विद्यालय और विद्यालयेतर परिवेश को जोड़ने का कार्य करता है।
- योग्या ने बताया कि उसकी माता ने उसे घर पर स्प्राउट बनाना सिखाया था। स्प्राउट स्वास्थ्य के लिए क्यों लाभकारी है? उसमें कौन-से तत्व मिलते हैं? ये बातें बताई थीं। बाद में यही गतिविधि विज्ञान की कक्षा में भी करवाई गई।
- अर्नव ने बताया कि उसे विद्यालय में बगीचे का मॉडल बनाने का परियोजना कार्य मिला था। उसके माता-पिता और भाई ने इस परियोजना कार्य को पूरा करने में उसकी मदद की थी।
- निशीथ ने बताया कि उसने अपने पिता के साथ मिलकर स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख क्रांतिकारियों पर परियोजना कार्य किया था। उसके पिता बताते हैं कि 15 अगस्त के आसपास के अखबार और पत्रिकाओं से सामग्री इकट्ठा की थी। वे बताते हैं कि यद्यपि सामग्री इकट्ठी करने में उनके द्वारा सहयोग किया गया। लेकिन उसे पढ़ने, विचार करने और अपनी समझ से बच्चे ही काम करें, इसका वे ध्यान रखते हैं।
- शौर्य ने बताया कि उसने अपने अभिभावकों की मदद से बिजली से चलने वाला एक मॉडल बनाया था। मॉडल बनाने के दौरान उसके पिता ने उसके साथ बिजली के उपकरणों को कैसे एक-दूसरे से जोड़ा। इस विषय पर चर्चा की। बेशक उसके पिता का मार्गदर्शन और सहयोग था लेकिन इस कार्य को उसने स्वयं पूर्ण किया।

अत: उक्त अनुभवों से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों को अभिभावकों के सोद्देश्यपूर्ण सहयोग और मार्गदर्शन से परिवार की सांस्कृतिक पूँजी लाभान्वित हो रही है। अभिभावक विद्यालयी ज्ञान का विस्तार करने के लिए अखबार, पत्रिकाओं और खोजपूर्ण ई-सामग्री आदि का प्रयोग कर रहे हैं। अभिभावकों ने साझा किया कि वे ऑनलाइन शॉपिंग के माध्यम से बच्चों के लिए कहानी की किताब, विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान की परियोजनाओं से जुड़ी सामग्री खरीदते हैं। बच्चों के लिए पत्रिकाएँ भी मंगवाते हैं। अभिभावकों ने ये भी बताया कि वे पाल्यों के साथ मिलकर यूट्यूब पर परियोजना को कैसे करना है? उसे देखते हैं। इंटरनेट पर मिलकर सर्च करते हैं। अभिभावकों ने यह बताया कि वे प्रतिदिन बच्चों द्वारा किए गए कार्यों को देखते हैं। वे केवल यह सुनिश्चित नहीं करते कि कार्य पूरा किया है बल्कि यह भी ध्यान देते हैं कि कार्य 'अच्छे' से पूरा किया गया हो। गृहकार्य के लिए दिए गए निर्देशों

का पालन हो। जब बच्चे गृहकार्य कर रहे होते हैं तो अभिभावक भी उनके साथ बैठकर अखबार और पत्रिकाएँ पढ़ते हैं। अभिभावकों का मानना है कि ऐसा करने से बच्चों की गृहकार्य में संलग्नता बनी रहती है। वे बच्चों को मौखिक परीक्षा के लिए तैयार करना, प्रस्तुतीकरण के लिए मार्गदर्शन देने में सहयोग करते हैं। अभिभावकों के अनुसार सप्ताहांत और अवकाश के समय परियोजना कार्यों में अधिक मार्गदर्शन और सहयोग की आवश्यकता होती है।

अवकाश और आराम की अवधि— आनंद और अभिरुचियों में संलग्नता

नगरीय मध्यमवर्गीय बच्चों की अधिगम पारिस्थितिकी का एक महत्वपूर्ण घटक उनके द्वारा नियमित विद्यालय के बाद शेष समय और अवकाश के दिनों में की जाने वाली गतिविधियाँ हैं। इस शोध अध्ययन में इन गतिविधियों के दो वर्ग पाए गए। पहले वर्ग में आराम और आनंद के लिए की जाने वाली असंरचित गतिविधियाँ थीं। उल्लेखनीय है कि बच्चों को घर के बाहर खेलने, घूमने और दोस्तों के साथ समय बिताने के लिए अपेक्षाकृत कम समय दिया गया है। इस शोध अध्ययन के भागीदार विद्यार्थियों ने स्वयं बताया कि उन्हें इन गतिविधियों के लिए अधिकतम दो घंटे का समय मिलता है। इस दौरान वे घर से बाहर पार्क में दोस्तों के साथ खेलते हैं, साइकिल चलाते हैं और दोस्तों के साथ बैठकर बातें करते हैं।

विद्यार्थियों ने क्रिकेट और फुटबॉल जैसे खेलों के लिए स्थान की समस्या का भी उल्लेख किया। बड़े बच्चों का मानना था कि पार्क में झूले और जिम की व्यवस्था है लेकिन वे इनका उपयोग नहीं करते हैं। पार्क में हमउम्र साथियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में भिन्नता होती है लेकिन सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि और विद्यालयी पृष्ठभूमि एकसमान होती है। बच्चे आपस में विद्यालय की गतिविधियों, लोकप्रिय कार्टून पात्रों, वीडियो गेम और इसी प्रकार की नई तकनीकियों पर चर्चा करते हैं। इस दौरान वे आसपास की दुकानों से नमकीन, बिस्कुट और कोल्ड ड्रिंक लेकर कभी-कभी पार्टी भी करते हैं।

- इस शोध अध्ययन में अभिभावकों ने बताया कि पार्क में खेलने के दौरान बच्चों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए दादा-दादी, नाना-नानी निगरानी के लिए उपस्थित रहते हैं। वे बच्चों के खेल की मॉनिटरिंग करते हैं तथा यह सुनिश्चित करते हैं कि वे खेलते हुए अपार्टमेंट के बाहर न जाएँ और आपस में लड़ाई झगड़ा न करें। कुछ भागीदार विद्यार्थियों ने बताया कि वे शाम के समय पालतू पशुओं को घुमाने के लिए भी ले जाते हैं। अभिभावकों ने बताया कि जब शाम को उनके पाल्य बाहर खेलने जाते हैं उससे पहले वे अपना विद्यालयी कार्य पूरा कर लेते हैं, जिससे वे अपने साथियों के साथ अधिक-से-अधिक समय बिता सकें। सप्ताहांत पर बच्चे अपने अभिभावकों के साथ मॉल, गार्डन, संग्रहालय आदि घूमने जाते हैं। इस भ्रमण के दौरान उन्हें खेलों में भागीदारी का मौका भी मिलता है। इस भ्रमण से बच्चों में बाज़ार की समझ भी विकसित होती है। इसका परिचय देते हुए भागीदार 'सेल', 'डिस्काउंट' और 'ऑफर' का उल्लेख करते हैं।
- इन गतिविधियों के साथ-साथ बच्चों ने ये भी साझा किया कि वे खाली समय में उपन्यास,

कहानियाँ और पत्रिकाएँ भी पढ़ते हैं। इसके अंतर्गत हैरी पॉटर और सिंड्रेला के पात्रों से जुड़ी पुस्तकों का उल्लेख किया। यह भी बताया कि वे पंचतंत्र और जातक कथाओं को भी पढ़ते हैं। कुछ विद्यार्थियों ने साझा किया कि वे अवकाश के दिन कभी-कभी चित्र बनाने का कार्य भी करते हैं।

दूसरे वर्ग में कला, अभिनय, खेल और संगीत आदि से जुड़ी संरचित गतिविधियाँ सम्मिलित थीं। भागीदार बच्चे बाँसुरी, पियानो, फुटबॉल, क्रिकेट और स्विमिंग आदि के प्रशिक्षण के लिए जाते थे। विद्यालय जैसे ही छोटे-छोटे प्रशिक्षण केंद्र खुले हुए हैं। इन प्रशिक्षण केंद्रों के बारे में अभिभावक अपने सामाजिक संबंधों के माध्यम से जानकारी प्राप्त करते हैं और अपने बच्चों को सप्ताहांत में इन कक्षाओं में भेजते हैं। बच्चों के अभिभावक इन गतिविधियों को उनकी अभिरुचियों, प्रतिभाओं और जीवन कौशलों के विकास से जोड़कर देखते हैं।

- दिव्यांशी के पिता बताते हैं कि वे उसे नृत्य और अभिनय के विशेष प्रशिक्षण के लिए भेजते हैं, इससे उनकी बेटी की रचनात्मकता का विकास होगा।
- ईशानी के पिता बताते हैं वे उसे तैराकी और टेनिस के प्रशिक्षण के लिए भेजते हैं, उनके अनुसार इससे उसके समय का सदुपयोग होता है।
- प्रिशा की माता इन संलग्नताओं को नए समय की आवश्यकता से जोड़ती हैं और कहती हैं, "अब तो जमाना बदल गया है। खेल और अभिनय ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ बहुत से अवसर मिलते हैं यदि बच्चों की रुचि है तो मैं अवश्य चाहूँगी कि वह इस क्षेत्र में भी आगे जाएँ। मैं अपनी ओर से अपने बच्चे पर कुछ थोपना नहीं चाहती हूँ।"
- अथर्व के पिता अपना मत साझा करते हुए कहते हैं कि वे अपने बेटे को क्रिकेट और स्विमिंग के प्रशिक्षण के लिए भेजते हैं। ये गतिविधियाँ उनके बच्चे को शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से मज़बूत करती हैं। इस संदर्भ में लॉरयू (2011) का मानना है कि मध्यमवर्गीय अभिभावक कला, खेल और सांस्कृतिक प्रशिक्षण की अन्य गतिविधियों के माध्यम से मध्यमवर्गीय मूल्यों को पुनरुत्पादित करने का प्रयास करते हैं। विंसेट और बाल (2007) का मानना है कि ये गतिविधियाँ बच्चों के जीवन में बाज़ार के अप्रत्यक्ष हस्तक्षेप का उदाहरण हैं। इनके अनुसार मध्यमवर्गीय बच्चों के जीवन में बाज़ार दो रास्तों से प्रवेश करता है। पहला, खिलौनों और शैक्षिक उत्पादों के माध्यम से और दूसरा, अभिरुचि और सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रशिक्षण केंद्रों के माध्यम से। इस शोध अध्ययन के आँकड़े इसका समर्थन करते हैं। कनिष्क की माँ ने बताया कि वह जिन अतिरिक्ति गतिविधियों में कनिष्क को भेजती हैं उसके लिए उन्हें शुल्क देना पड़ता है, सामग्रियों को खरीदना पड़ता है। वह इस निवेश को सुरक्षित निवेश के रूप में देख रही हैं जो आगे चलकर उनके बच्चों को 'आगे बढ़ने' में मदद करेगा। कनिष्क की माँ के विचारों में निहित 'आगे बढ़ने' का भाव प्रतियोगिता की ओर संकेत कर रहा है जिसमें वे अपने पाल्य को सभी तरह के अनुभव व अवसर देना चाहती हैं। मध्यमवर्गीय अभिभावक अभिरुचियों के मूल्य को पाल्यों के भविष्य के सापेक्ष आँक रहे हैं।

जनसंचार और डिजिटल माध्यमों के साथ संलग्नता

इस शोध अध्ययन के भागीदार बच्चों की दिनचर्या में टेलीविजन देखना, अभिभावकों के मोबाइल फोन पर इंटरनेट चलाना, सोशल मीडिया का प्रयोग करना, यू-ट्यूब पर वीडियो देखना, वीडियो गेम खेलना, लैपटॉप और कंप्यूटर पर सर्च करना, अखबार और पत्रिकाओं को पढ़ना सम्मिलित था। भागीदार बच्चे दो भागों में टी.वी. देखते हैं— विद्यालय से लौटने के बाद और रात को भोजन के दौरान एवं बाद में। वे बताते हैं कि विद्यालय से लौटने के बाद वे किन कार्यक्रमों को देखेंगे? इसके बारे में वे स्वतंत्र होते हैं जबकि रात में अभिभावकों के पसंद का भी कार्यक्रम चलता है। शनिवार, रविवार और अवकाश के अन्य दिनों में कोई पाबंदी नहीं रहती है। वे दोपहर में भी टी.वी. देख सकते हैं। इन दिनों में वे फिल्में भी देखते हैं। वे *जंगलबुक, अलादीन* और *द लायन किंग* जैसी फिल्मों को देखना पसंद करते हैं। कॉर्टून और फिल्मों के साथ वे बैंडमिंटन, फुटबॉल और क्रिकेट का खेल भी देखते हैं। विद्यार्थियों ने साझा किया कि उनके अभिभावकों द्वारा धार्मिक और ऐतिहासिक प्रकृति के धारावाहिकों और समाचार को देखने पर बल दिया जाता है। योग्या ने बताया कि उसने अपनी माता की सलाह पर अहिल्याबाई और लक्ष्मीबाई पर आधारित कार्यक्रम देखे। इससे उसे महिला सशक्तीकरण एवं इतिहास की जानकारी मिलती है।

इस शोध अध्ययन के भागीदार बच्चों के पास अपना मोबाइल फोन नहीं था। बच्चों के अनुसार वे 'अपना' मोबाइल फोन रखना चाहते हैं, लेकिन उनके अभिभावक उन्हें 'छोटा बच्चा' मानते हैं, इसीलिए इसकी अनुमति नहीं देते हैं। फिर भी, सभी भागीदारों ने बताया कि वे अभिभावकों की अनुमति से उनके मोबाइल फोन का उपयोग करते हैं। इनमें से अधिकांश बच्चे माताओं के फोन का उपयोग करते हैं। क्योंकि 'मम्मी के घर पर रहने के कारण उनका फोन आसानी से मिल जाता है।' भागीदारों के अनुसार मोबाइल पर खेलने, गाने सुनने, गूगल पर सर्च करने और दोस्तों के साथ बात करने की गतिविधि करते हैं। कुछ बच्चे माताओं के फोन पर ही सोशल मीडिया का भी उपयोग करते हैं। इस बारे में माताओं का कहना था कि वे चाहती हैं कि बच्चे मोबाइल का सीमित उपयोग करें, लेकिन बच्चे इसके अधिक उपयोग की माँग करते हैं। वे यू-ट्यूब पर गाने देखते व सुनते हैं, गेमिंग के वीडियो देखते हैं और अपने प्रिय कार्यक्रमों का जो एपिसोड टी.वी. पर नहीं देख सके, उन्हें देखते हैं। अभिभावकों ने कहा कि जब बच्चे मोबाइल पर संलग्न रहते हैं तो वे समय-समय पर उनकी निगरानी करते रहते हैं। कुछ अभिभावकों ने अपने मोबाइल पर विशेष सेटिंग लगा रखी है जो आपत्तिजनक सामग्री से बच्चों को दूर रखती है। भागीदार बच्चों ने अपनी माताओं के मोबाइल से अपने दोस्तों के व्हाट्सएप समूह भी बना रखे हैं। प्रिशा, अथर्व और निशीथ ने बताया कि वे अपने दोस्तों से व्हाट्सएप पर जुड़े हुए हैं। वे अभिभावकों की अनुमति से वीडियो कॉल और ग्रुप कॉल भी करते हैं। भागीदार बच्चों ने ये भी बताया कि इस माध्यम के प्रयोग से उनके

अभिभावकों में भी मित्रता हो गई है। इस बारे में अभिभावकों की राय थी कि वे अपने बच्चों के दोस्तों के परिवार से जुड़कर यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि उनके बच्चों की संगत अच्छी हो। बच्चे मोबाइल फोन का उपयोग खाली समय में फोटो खींचने और वीडियो बनाने के लिए भी करते हैं। वे इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त करते हैं कि उनके अभिभावक उनके छोटे वीडियो को अपने दोस्तों के साथ भी साझा करते हैं।

विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों ने इंटरनेट के उपयोग के विषय में सकारात्मक अनुभव साझा किए। अथर्व और प्रिशा ने बताया कि जब उसके मन में कोई सवाल आता है तो उसे वह इंटरनेट पर खोजते हैं। सभी विद्यार्थियों ने बताया कि वे विद्यालय द्वारा दिए गए होमवर्क से संबंधित खोज के लिए इंटरनेट का प्रयोग करते हैं। वे विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, भाषा, गणित आदि विषयों की परियोजना से संबंधित विचारों को खोजते हैं। इसी तरह उन्होंने हिंदी दिवस पर कविता खोजने का उदाहरण भी साझा किया। प्रत्येक परिवार में अखबार और पत्रिकाएँ भी आती हैं। बच्चों ने बताया कि वे अखबार को बस उलट-पुलट लेते हैं। वे इसे ध्यान से नहीं पढ़ते। वे इसका कारण यह बताते हैं कि अखबारों में जो छपता है वह उन्हें इंटरनेट और टी.वी. से पहले ही पता चल जाता है। फिर भी, स्कूल के कार्यों के लिए सप्ताहांत पर अखबारों से चित्र छाँटने, खबर छाँटने और सूचना खोजने का कार्य करते हैं।

कपूर (1998) का मानना है कि मध्यमवर्गीय परिवारों में मीडिया की संलग्नता बच्चों को वैश्विक बाज़ार का उपभोक्ता बनाने के लिए तैयार कर रही है। इस शोध कार्य के भागीदार बच्चों के साक्षात्कार में भी यह प्रकट हुआ कि वे किन उत्पादों को खरीदेंगे? इस पर जनसंचार के माध्यमों, विशेषकर कॉर्टून पात्रों और विज्ञापनों का सर्वाधिक प्रभाव पड़ रहा है। साक्षात्कार के दौरान विद्यार्थियों के घरों पर डिज्नी, हैमलेज जैसे बाल-उत्पादों की सामग्रियाँ दिखीं। बच्चों के कमरों और पढ़ने के स्थान की सजावट में भी इससे जुड़ी सामग्रियाँ प्रयोग की गई थीं। अभिभावकों ने भी बताया कि उनके पाल्य अपनी पसंद के टी.वी. पात्रों पर आधारित ड्रेस, खिलौने, पेंसिल-बॉक्स आदि सामान खरीदना चाहते हैं। बच्चे जूतों, कपड़ों, घड़ियों आदि के ब्रांड की जानकारी टी.वी. के विज्ञापनों से प्राप्त करते हैं और उन्हें खरीदने के लिए अभिभावकों से अनुरोध करते हैं।

अभिभावकों ने जनसंचार एवं डिजिटल माध्यमों के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रभावों पर चर्चा की। वे मानते हैं कि डिजिटल माध्यमों में बढ़ती संलग्नता संवाद और अन्तःक्रिया को कम करती है। अभिभावकों ने बताया कि जब उनके बच्चे फोन पर गेम खेल रहे होते हैं या टी.वी. पर कोई कार्टून देख रहे होते हैं तो वे न तो अभिभावकों से बातचीत करना चाहते हैं और न ही आपस में।

- ईशानी की माता ने बताया कि विद्यालय से लौटकर आने के बाद और रात्रि भोजन के दौरान उनकी बेटी अकेले टी.वी. देखना चाहती है। इस दौरान वह न तो किसी से बात करना चाहती है और न ही किसी के हस्तक्षेप को बर्दाश्त करती है।
- सार्थक की माताजी ने बताया कि वह मोबाइल फोन का उपयोग करने की शर्त पर माँ द्वारा दिए

निर्देशों का पालन करता है। वह घरेलू कार्यों में सहयोग के बदले गेम खेलने की शर्त रखता है। अभिभावकों का मानना है कि इंटरनेट के प्रयोग से बच्चों के सीखने में सुविधा हुई है।

- कनिष्क के पिता बताते हैं कि किताबों से सूचना खोजने की तुलना में इंटरनेट पर कुछ खोजना आसान होता है।
- प्रिशा के पिता बताते हैं वे अपनी बेटी के लिए ऑनलाइन लर्निंग ऐप को सब्सक्राइब करने की सोच रहे हैं।
- शौर्य की माताजी बताती हैं कि इंटरनेट के कारण उन्हें और उनके बेटे को विद्यालय की परियोजना करने में सुविधा होती है। अभिभावक साझा करते हैं कि चूँकि टी.वी. कार्यक्रमों का बच्चों की भाषा और चिंतन पर प्रभाव पड़ता है इसीलिए वे बच्चों के इन कार्यक्रमों का आकलन भी करते हैं। बच्चों द्वारा देखे जाने वाले कार्यक्रमों में हिंदी की तुलना में अंग्रेजी कार्यक्रमों की आवृत्ति अधिक है। अभिभावकों ने चिंता प्रकट की कि पाल्य ऐसे शब्दों और मुहावरों का प्रयोग करते हैं जो सामान्य चलन में ठीक नहीं समझे जाते हैं। वे बच्चों द्वारा व्हाट्सएप और सोशल मीडिया पर लिखी जाने वाली भाषा के प्रयोग से भी चिंतित हैं। अभिभावकों का मानना है कि वीडियो गेम खेलने की तुलना में टी.वी. देखना बेहतर विकल्प है।
- अथर्व के पिता अथर्व द्वारा खेले जाने वाले वीडियो गेम का उदाहरण देते हुए इसके द्वारा होने वाली हिंसक संलग्नता के प्रति चिंता प्रकट करते हैं।

निष्कर्ष

इस शोध अध्ययन के आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि नगरीय मध्यमवर्गीय बच्चों की अधिगम पारिस्थितिकी संसाधन संपन्न है। इस संसाधन संपन्नता के लिए आर्थिक निवेश में अभिभावक पीछे नहीं हटते हैं। वे संसाधनों द्वारा अवसरों की उपलब्धता में विश्वास रखते हैं। बच्चों के लिए संसाधन संपन्न परिवेश अनुभवों में विविधता लाता है, लेकिन यह विविधता 'पुनरुत्पादन' से पूर्ण है। वे उपकरणों और मशीनों के अवलोकन, अभिभावकों के मार्गदर्शन में उनके उपयोग से अपने सैद्धांतिक ज्ञान को समृद्ध कर रहे हैं।

यद्यपि विद्यार्थी अपने परिवेश की अनेक गतिविधियों में संलग्न हैं। ये संलग्नताएँ संरचित और वयस्कों की निगरानी और मार्गदर्शन में हैं। बच्चों की गतिशीलता का क्षेत्र सीमित और अनुशासित है। वे अधिकांश समय अपने घर के भीतर ही गुज़ार रहे हैं जहाँ जनसंचार और डिजिटल माध्यमों के साथ संलग्नता बाहर की दुनिया से परिचित करा रही है। बच्चों की इस तरह की प्रत्येक संलग्नता उनके भविष्य की सफलता से जुड़ी है जो उन्हें ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में अपना स्थान प्राप्त करने में समर्थ बनाएगी। इसी कारण बच्चों के लिए 'कार्य' की अवधारणा में पढ़ने-लिखने, खोजने और प्रस्तुत करने को रखा गया है। जिसमें श्रम आधारित प्रयासों के बजाए कौशल आधारित प्रयासों पर अधिक ज़ोर दिया गया है। बच्चों में कम समय में अधिक कार्य करने की आदत को पोषित किया जा रहा है। उनके परिवेश की मुद्रित, मौखिक और ई-सामग्री की उपलब्धता उनके विद्यालयी ज्ञान को पुष्ट करने का कार्य कर रही है। विशेषतः उनकी भाषाई दक्षता,

कल्पनाशक्ति, ज्ञान और सूचना के विविध स्रोतों से परिचित कराने का कार्य कर रही है। इनके माध्यम से घर के अधिगम परिवेश में 'वैज्ञानिक' ज्ञान की उपस्थिति बनी हुई है। वे स्व-अधिगमकर्ता के रूप में विकसित हो रहे हैं।

अभिभावक शिक्षित मध्यमवर्गीय एवं उच्च आय वाले समूह के प्रतिनिधि हैं। इसके प्रतिनिधि के रूप में अभिभावकत्व का निर्वहन करते हुए उनका विश्वास है कि वे अपने पाल्यों के स्वाभाविक विकास के मार्ग के साथ-साथ एक 'सुरक्षित और संरचित मार्ग' निर्मित कर सकते हैं। इसके लिए उन्होंने अपने पाल्यों के साथ यह साझा समझ विकसित कर ली है कि विद्यालय जीवन और उपलब्धि सर्वाधिक महत्वपूर्ण है और इसके लिए परिश्रम करना पड़ता है। इस परिश्रम में अभिभावक भी शामिल हैं। वे संसाधन प्रदाता से लेकर बच्चों के साथ सह-अधिगमकर्ता की भूमिका में हैं। वे बच्चों के समग्र विकास के लिए खेल, संगीत और कला जैसे क्षेत्रों में अपने पाल्यों को सीखने का संरचित एवं संस्थागत अवसर उपलब्ध करा रहे हैं। वे बच्चों के साथ भावनात्मक सहयोग विकसित कर रहे हैं। वे विद्यालय के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने का कार्य भी कर रहे हैं। अभिभावक विशेषज्ञों की भूमिका में बच्चों को अनौपचारिक बातचीत के माध्यम से सांस्कृतिक पूँजी से परिचित करा रहे हैं। अत: मध्यमवर्गीय नगरीय बच्चों की अधिगम पारिस्थितिकी संसाधन संपन्न है। इसके कर्ता अभिभावक और स्वयं बच्चे हैं। इनकी गतिविधियों की दिशा सांस्कृतिक पूँजी के पुनरुत्पादन द्वारा अपनी विशिष्ट स्थिति को बनाए रखने की ओर है। शिक्षा द्वारा आर्थिक अवसरों का लाभ लेने की आकांक्षा के कारण विद्यालयेतर परिवेश सोद्देश्य और संरचित गतिविधियों के माध्यम से विद्यालय के पूरक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

संदर्भ

कपूर, जे. 1998. ए स्माल वर्ल्ड ऑफ्टर ऑल— ग्लोबलाइजेशन एंड द ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ चाइल्डहुड इन इंडिया. *विजुअल एंथ्रोपोलॉजी*. 11. पृष्ठ संख्या 387–397.

कुमार, नीता. 2011. द मिडिल क्लास चाइल्ड— रियूमिनेशंस ऑन फेल्योर. संपादन में. भाविस्कर, ए. और रे, आर. (संपादक). 2011. *एलीट एंड एवरीमैन— द कल्चरल पॉलिटिक्स ऑफ द इंडियन मिडिल क्लास*. रुटलेज. नई दिल्ली. पृष्ठ संख्या 220–245.

गुप्ता, ए. 2019. हेट्रोजिनियस मिडिल क्लास एंड डिसपेरेट एजुकेशनल एडवांटेज— पैरंटल इन्वेस्टमेंट इन देयर चिल्ड्रेंस स्कूलिंग इन देहरादून, इंडिया. *ब्रिटिश जर्नल ऑफ एजुकेशन*. 4 (1). पृष्ठ संख्या 48–63.

देशपांडे, एस. 2003. *कंटेम्परेरी इंडिया— ए सोशियोलॉजिकल व्यू*. पेग्विन बुक्स, नई दिल्ली.

नांबिसान, जी. 2009. द इंडियन मिडिल क्लासेज एंड एजुकेशनल एडवांटेज— फैमिली स्ट्रेटजी एंड प्रैक्टिसेज. संपादन में. एम.डब्ल्यू एप्पल, एस.जे. बाल, एल.ए. गांडीन (संपादक). *द रुटलेज इंटरनेशनल हैंडबुक ऑफ दी सोशियोलॉजी ऑफ एजुकेशन*. रुटलेज एंड फ्रांसिस ग्रुप, लंदन. पृष्ठ संख्या 285–295.

फ्रेडरिक जे.ए. 2011. इंगेजमेंट इन स्कूल एंड ऑउट ऑफ स्कूल कॉन्टेक्स्ट— ए मल्टीडाइमेंशनल व्यू ऑफ इंगेजमेंट. *थियरी इनटू प्रैक्टिस*. 50 (4). पृष्ठ संख्या 327–335.

भाविस्कर, ए. और रे. आर. 2011. *एलीट एंड एवरीमैन— द कल्चरल पॉलिटिक्स ऑफ द इंडियन मिडिल क्लास*. रुटलेज, नई दिल्ली.

लारयू, ए. 2011. *अनइक्वल चाइल्डहुड्स— क्लास, रेस एंड फैमिली लाइफ*. यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, बर्कले.

लार्सन, आर. डब्ल्यू और एस. वर्मा. 1999. हॉउ चिल्ड्रेन एंड एडोलसेंट स्पेंड टाइम एक्रास द वर्ल्ड— वर्क. प्ले एडं डेवलपमेंटर ऑपरच्यूनिटीज. *साइकोलॉजिकल बुलेटिन*. 25 (1). पृष्ठ संख्या 701–736.

विंसेंट, सी. और एस. बी. 2007. मेकिंग अप द मीडिल क्लास चाइल्ड— फैमलीज एक्टिविटीज एंड क्लास डिसपोजिशंस *सोशियोलॉजी*. 4 (6). पृष्ठ संख्या 1061–1077.

वैलेंटाइन, जी. 2004. *पब्लिक स्पेस एंड द कल्चर ऑफ चाइल्डहुड*. एल्डरशॉट, एशगेट.